स्कूली शिक्षा व्यवस्था बनाम अरण्य रोदन

डॉ. वीना सुमन

हिंदी उपन्यास की परंपरा में यह उपन्यास इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उपन्यास जहाँ वैश्विक परिदृश्य को समेटता हैं वहीं अपना 'लोकेल' नहीं छोड़ता। कहने का अर्थ यह है कि भारतीय संरचना में जो घटित हो रहा है, वह एक वैश्विक सत्ता संरचना का हिस्सा है। यह बात इसलिए भी कही जा सकती है, क्योंकि हिंदी में 'ग्लोबल विलेज' की अवधारणा 90 के बाद आई, पर इस उपन्यास का प्रथम संस्करण 1985 में आया। आने वाले भविष्य में क्या होगा यह उपन्यास हमें इसका संकेत दे देता है। कहने का अर्थ यह है कि सब कुछ एक दूसरे से जुड़ा हुआ है इसलिए इसमें आपातकाल है तो युगांडा, चीन, वियतनाम भी हैं। समकालीन यथार्थ इतना गतिशील और बहुस्तरीय है कि उसको उसकी समूची गतिशीलता और बहुस्तरीयता में पकड़ पाना किसी भी लेखक के लिए बड़ी चुनौती है। बात जब उपन्यास की हो तो सबसे पहले जो ध्यान देने योग्य बात है वह यह है कि उपन्यास आकार से उपन्यास नहीं होता बल्कि उपन्यास बनता है महाकाव्यात्मक चेतना से यानी लेखक समय के यथार्थ को उसकी समूची गतिशीलता और बहुस्तरीयता में पकड़ पा रहा है या नहीं।

अब समय ब्लैक एंड ह्वाइट का नहीं है, बल्कि हमारे समय का यथार्थ बहुत ग्रे और धूसर है। लेखक जब अपने यथार्थ को उसकी धूसरता में पकड़ पाता है या चित्रित कर पाता है तो यह उसकी सफलता होती है। इसके लिए जरूरी है कि लेखक के पास परदे के पीछे के यथार्थ को देखने की दृष्टि होनी चाहिए। इसके साथ ही महत्वपूर्ण बात यह है कि लेखक के पास वह भाषिक एवं संरचनात्मक कला होनी चाहिए कि वह परदे के पीछे के यथार्थ को इस तरह प्रस्तुत करे कि पाठक उसको अपने सामने घटित होता हुआ महसूस करे और इस तरह घटित होता हुआ महसूस करे कि यह यथार्थ उसके रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा है। यही संप्रेषण है। इस लिहाज से अरण्य रोदन उपन्यास जो कि तकरीबन 35-40 साल पहले लिखा गया यह उपन्यास पूर्वोक्त सभी बातों को अपने में समेटे हुए है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उस समय न इतना गति आधारित समय था न इतना सूचना संजाल। फिर भी उस समय उपन्यासकार अपने समय के यथार्थ को इस तरह देख रहा था मानो आज का कोई लेखक देख रहा हो। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे पढ़ते हुए भालचंद नेमाणे के प्रसिद्ध उपन्यास 'कोशला' (1963) के शैली और कथ्य की याद लगातार आती है। अपनी व्यंग्यात्मकता, भाषा शैली और कहने के स्तर पर यह उपन्यास भारतीय उपन्यासों की उस परंपरा से जुड़ा हुआ है जो अपने आप में एकदम अलग और विद्रोही थी। यह उपन्यास भारतीय उपन्यासों के परिदृश्य से अलग है, यह उपन्यास भारतीय लोकेल (क्षेत्र) का अतिक्रमण कर अन्तर्राष्ट्रीय परिघटनाओं से पाठक को जोड़ता है। उपन्यास में चीन, वियतनाम, अमेरिका, युगांडा से लेकर भारत के आपातकाल और उसे सही साबित करने वाले बुद्धिजीवियों विनोवा भावे (अनुशासन पर्व) जैसी तमाम परिघटनाओं को अपने दायरे में लेता है और उनकी आलोचना प्रस्तुत करता है।

मजे की बात यह है कि जेनुइन प्रतिरोधी ताकतों के समर्थन में (अमेरिका वियतानामवार) वह वियतनाम के लड़ाकों की तारीफ करता है, इसके साथ ही साथ वैश्विक स्तर पर जहाँ भी तानाशाही या दमनात्मक हिंसक कार्यवाहियाँ हो रही हैं, उसका माखौल उड़ाता है। चाहे वह सीआईए हो, माओ हो या युगांडा के तानाशाह ईदी अमीन हो। लेखक की नज़र सिर्फ सेक्युलर राज्य के स्कूलों पर ही नहीं है वरन उसकी नज़र सिक्किम से होकर पूरे भारत एवं पूरे विश्व पर है। जहाँ कहीं भी कुछ गलत हो रहा है, इस उपन्यास में वह उस गलत के खिलाफ अपनी शैली में खड़ा है।

इस उपन्यास की एक कमजोरी भी है कि इसमें इतने मुद्दे उठाए गए हैं कि तमाम मुद्दे उठाने के बाद जो एक सेन्ट्रल स्टोरी बन सकती थी वह नहीं बन पाई है। उपन्यास में स्कूली सिस्टम में मुद्दे उठाए गए हैं उदाहरण के लिए मिस्टर सेठी जैसे पात्रों के माध्यम से हम देखते हैं कि उपन्यास में वह अपनी भूमिका को तय ही नहीं कर पाता है। क्योंकि वह उपन्यास में एक बेहतर मनुष्य के रूप में हमारे सामने उपस्थित नहीं होता बल्कि वह भी उसी सिस्टम के हिस्से के रूप में इस उपन्यास में हमारे सामने आता है, यह इसलिए भी कहा जा सकता है क्योंकि उपन्यास में वह बहुत बाद में अपना इस्तीफा देता है।

उपन्यास में कोई मजबूत पात्र उभरकर हमारे सामने नहीं आता है, ऐसा इसलिए भी हो सकता है क्योंकि कभी-कभी यह देखा जाता है कि किसी काल विशेष में समस्याओं का दौर इतना ज्यादा होता है कि लिखने के क्रम में बहुत सी चीजें छूट जाती हैं। उपन्यास की जो सबसे अच्छी बात है, वह है नेशन बिल्डिंग अर्थात राष्ट्र निर्माण जिसमें बार-बार संस्कृति के मजबूत होने पर जोर दिया गया है। विजयदेव नरायण साही ने कहा है कि ‘‘विचारधारा से आप पंथ का निर्माण करते हैं और मूल्यों से संस्कृति का।’’ उपन्यास में मैकाले का भी जिक्र आया है जिसमें अंग्रेजी भाषा के माध्यम से अंग्रेजी संस्कृति किस तरह से हमारे रोजमर्रा के जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन गयी है। इस बात से भी हमें परिचित कराता है और उपन्यास में इसका परिचय हमें पात्रों के संवाद योजना से मिलता है कि किस तरह से अंग्रेजी शिक्षा पद्धति फल-फूल रही है।

अज्ञेय कहतें है कि भाषा में होना एक परंपरा में होना है, क्योंकि भाषा संस्कृति की संवाहक होती है। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारत सरकार ने मातृभाषाओं में शिक्षा पर जोर दिया है। उपन्यास के केन्द्र में स्कूली सिस्टम है, वह सिस्टम जो राष्ट्र निर्माण करता है इसके साथ ही साथ स्कूली शिक्षा की नींव कितनी कमजोर है और कितनी मजबूत है इस पर भी बात की गई है। इस उपन्यास में स्कूली शिक्षा की नींव की कमजोरियों को दिखाने का प्रयास बखूबी किया गया है, क्योंकि संस्थाए समाज की मूलभूत इकाई होती हैं और सबसे मजबूत पक्ष यह कि इसमें स्कूली शिक्षा के माध्यम से प्राइमरी शिक्षा पर भी बात की गयी है। सेन्ट्रल पोलिटिकल डिस्कोर्स के साथ दुनिया और विश्व में जो चल रहा है, उस पर भी चर्चा की गई है।

एक सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि हम सभी जानते हैं कि सब कुछ पालिटिक्स है और स्कूली सिस्टम भी स्टेट संरचना से ही जुड़ा हुआ मामला है और इसको गाइड और डिजाइन करने वाले तत्व भी उसी पावर स्ट्रेक्चर में आते हैं। हम देखते हैं कि पावर स्ट्रेक्चर का मसला यह है कि वह सब कुछ अपने अनुकूल करना चाहता है, इसलिए हम कह सकते है कि जैसा बीज होगा, पेड़ भी वैसा ही होगा।

उपन्यास में हम देखते हैं कि प्रधानाचार्य के कुर्सी को पाने के क्रम में उपन्यास में आए पात्र किस तरह सत्ता के शिखर पर पहुँचते हैं और इसके लिए वो कितने उपक्रम करते हैं यह भी दिखाया गया है। इससे यह बात दृष्टिगत होती है कि हर एक्ट पावर में हिस्सेदारी चाहता है। पावर का मामला यह है कि राजनीति में मूल्य मायने नहीं रखता है, बल्कि सफलता मायने रखती है। यह गाँधी का मामला नहीं है, जहाँ वह कहते हैं कि ''राजनीति एक लंबी अवधि का धार्मिक कार्य है। अब तो देखा जाता है कि आप उस शिखर तक कैसे पहुँचे।'' राजनीति रिश्ते, नाते और रास्ते नहीं देखती, वहाँ साध्य और साधन का सवाल नहीं है। वहाँ मामला सिर्फ यह है कि सफलता क्या है।

यह बड़ी विडंबना है कि जिस देश में गाँधी ने आजादी की लड़ाई साध्य और साधन को केंद्र में रखकर लड़ी, उस देश की स्थिति क्या होती है कि सफलता ही सब कुछ हो जाता है। हम मैकाले द्वारा दिए गए उस पूरे सिस्टम को छोड़ नहीं पाते जो मैकाले ने दिया है इसलिए उपन्यास में कई ऐसे संवाद आए हैं जिसमें यह कहा गया है कि ''आई डू एग्री विद यू मी डोगरे, बट..... उपन्यास में अपने को अन्य लोगों से विशिष्ट बनाने के लिए किस तरह पात्र अंग्रेजी बोलते हैं और मैकाले की भाषा संस्कृति को आगे बढ़ाते हैं, यह भी दिखाया गया है।

शिक्षा व्यवस्था की खामियों को केंद्र में रखा गया है कि किस तरह से दूध वाले से लेकर रिक्शे वाले, सब्जी वाले तक इस पूरी व्यवस्था की चपेट में आते हैं। वो भले ही समझे या न समझे। शिक्षा व्यवस्था का मामला यह है कि वह अच्छे नागरिक बनाती है साथ ही वह विवके भी उत्पन्न करती है कि आप देश में चल रही किसी भी घटना पर निष्पक्ष भाव से अपनी बात रख सकें। लेकिन यहाँ प्रश्न यह उठता है कि जब मूल्य की जगह शिक्षा आँकड़ों और सफलता पर केंद्रित हो तो दिक्कत होगी ही जैसे साक्षरता हमारे यहाँ आँकड़ां पर निर्भर है। उपन्यास में तमाम प्रधानाध्यापक बदलते हैं और तमाम स्कूली शिक्षक बदलते हैं, लेकिन उसकी संरचना में रंच मात्र का भी परिवर्तन हमें नहीं दिखाई देता है।

स्कूली संरचना की शुरूआत का बाइडल रेंज भी यहीं से शुरू होता है, हम जेनुइन लेबल पर जैसे होंगे बच्चें भी वही सीखेंगे क्योंकि दोनों परस्पर रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं इसीलिए दोनों की बर्बादी पर दोनों का परस्पर हाथ हैं। उपन्यास में शिक्षा के मूल उद्देश्य को छोड़कर वह सभी कार्य हो रहा है जो व्यक्तिगत लाभ के लिए किया जा सकता है, इसका परिणाम यह होता है कि कोई अपने को ज्योतिष बताने लगता है तो कोई अध्यापकीय जुगत में लगा रहता है। बार-बार उपन्यास में संस्कृति की बात की जाती है जिसके तहत स्कूलों में कई तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराए जाते हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि शब्दों से संस्कृति नहीं बनती, बल्कि उसके लिए डिवोशन चाहिए होता है जो कि उपन्यास में वह नहीं के बराबर दिखाई देता है। सवाल यह है कि हम कौन सी संस्कृति चाहते हैं और क्या बन रही है? हम उसको बनाने की योग्यता रखते भी हैं या नहीं? ऐसे कई मुद्दे हैं जो कि इस उपन्यास में उठाए गए हैं क्योंकि हम सभी जानते हैं कि कोरा संस्कृति से काम नहीं चलेगा और यदि ऐसा होता रहा तो एक दिन पूरा देश संस्कृति विहीन होगा

और उसके बाद जो संस्कृति जन्म लेगी वह ईदी अमीन और हिटलर, माओं की संस्कृति होगी जो सफलता के लिए कुछ भी करने को तैयार होगी।

यह उपन्यास स्कूली शिक्षा व्यवस्था के उस मिथक को तोड़ता है, जिसमें यह कहा जाता है कि स्कूल मंदिर है। इस उपन्यास में धूमिल के साहित्य जैसा एग्रेशन और सटायर भी हमें बखूबी दिखाई देता है। उपन्यास की एक खास बात यह भी है कि वैश्विक स्तर पर जो सत्ता संघर्ष है उसको भी उपन्यास में दिखाया गया है। क्योंकि उपन्यास में बार-बार वियतनाम और युगांडा का जिक्र आया है इसीलिए कई तरह के तानाशाहों का जिक्र भी उपन्यास में आता है, जिससे यह पता चलता है कि तानाशाही वाले जितने भी मामले रहे हैं चाहे वह टीचर हो या किसी और पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति, स्ट्रेक्चर की तानाशाही दिखाई दे ही जाती है।

(लेखकीय परिचय: डॉ. वीना सुमन सुपरिचित कथा-समीक्षक हैं। वर्तमान में वाराणसी में अध्यापन कार्य से संलग्न हैं।)